50 कीर्तिमान करने वाले पहले भारतीय बने डॉ. दीपक हरके

अहमदनगर-महा.। अलग-अलग प्रकार के 50 विश्व कीर्तिमान स्थापित करने वाले प्रथम भारतीय होने का बहुमान अहमदनगर के प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के ध्यानधारणा विशेषज्ञ डॉ. दीपक हरके ने प्राप्त किया है। लंदन की वंडर बुक ऑफ इंटरनेशनल रिकॉर्ड्स संस्था ने डॉ. हरके को इससे सम्बंधित प्रमाणपत्र भेजा है। राज्य के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने यह प्रमाणपत्र प्रदान करते हुए डॉ. दीपक हरके को सम्मानित किया।

इस सफलता के बारे में जानकारी देते हुए डॉ. हरके ने बताया कि केवल नियमित ध्यान धारणा के अभ्यास के कारण ही यह सफलता हासिल करना संभव हो सका है। डॉ. दीपक हरके ने यूथ विंग को साथ लेकर 26.11.2010 को विश्व की सबसे बड़ी रंगोली निर्माण कर विश्वक्रम किया। नगर शहर के भाऊसाहेब फिरोदिया हायस्कूल के मैदान पर 97176 स्क्वायर फीट आकार की रंगोली का विक्रम आज भी गिनीज़ बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में कायम है।

उनके 50 विश्व कीर्तिमान में 1 लाख लोगों को एक साथ ध्यानधारणा, विश्व का सबसे छोटा कमल, विश्व की सबसे

छोटी राखी, राजयोगिनी दादी जानकीजी के 100वें जन्मदिन पर 'विश्व की सबसे बड़ी ट्रॉफी' द्वारा शुभकामना, राजयोगिनी दादी जानकीजी के 102वें जन्मदिन पर '100 अलग-अलग प्रकार के फूलों की माला' द्वारा शुभकामना आदि विश्व कीर्तिमान शामिल हैं।

श्रद्धा सुमन अर्पित

जगदीश प्रसाद अग्रवाल, जो 1965 में ईश्वरीय यज्ञ से जुड़े। वे 16 नवम्बर 2017 को अपना पुराना देह त्यागकर अव्यक्त हुए।

वे कलकत्ता में 'सिल्वर स्ट्रॉक' बनियान कम्पनी के मालिक थे। वे जब से ईश्वरीय सेवाओं से जुड़े, तब से उन्होंने वारिस बनकर इस यज्ञ में अथक सेवाएँ दीं। जयपुर के मदनलाल शर्मा जो आरंभ से ही उनके साथ पढ़ाई, व्यवसाय और ईश्वरीय सेवाओं में भी साथी रहे। वे बताते हैं कि उन्होंने एक साथ ही बाबा को पहचाना और दिल से बाबा पर समर्पित हो गए। एक माह में ही साकार बाबा से दोनों मिले। अनेकों बार अव्यक्त बापदादा से मिले। सभी दीदी दादियों से बेहद स्नेह व सभी का बेहद स्नेह दोनों आत्माओं ने सदा प्राप्त किया। वे बाबा, दादियों व वरिष्ठ भाइयों के सदा बहुत नज़दीक रहे। दोनों आत्माओं ने बाबा के अनेक स्थानों के निर्माण हेतु तन, मन, धन से सदा सहयोग दिया और आज भी देते हैं।

पिछले 20 वर्षों से बीमार होने के कारण जगदीश भाई जी कहीं आ-जा न सके, परन्तु अन्तिम श्वास तक भी वही नशा, वही प्यार, और दिल से सदा बाबा-बाबा और बाबा ही कहते रहे। जो भी उन्हें देखते तो कर्मभोग पर कर्मयोग की विजय दिखाई देती थी।

दोनों ही भाग्यशाली आत्मायें हैं। जब भी ये दोनों साथी साकार बाबा से मिलते थे तो बाबा कहते कि यह तो मेरे कल्प पहले वाले वारिस बच्चे हैं। वर्तमान समय भी जयपुर में एक भव्य भवन निर्माण, बाबा का स्थान बनाने में भी वह आत्मा सम्पूर्ण सहयोगी रही।

ऐसे बाबा के वारिस व यज्ञ स्नेही बच्चे को सर्व ब्रह्मावत्सों की ओर से स्नेह सुमन अर्पित।

जीवन है, बस लुटाना ही लुटाना...

- ब्र.कु. श्याम

जीवन का अंतर्ज्ञान प्राप्त करना हम सभी मनुष्य का लक्ष्य है। जीवन को जानने के प्रति होने वाली जिज्ञासा से ही वास्तविक धर्म का जन्म होता है। धर्म का प्रारंभ किसी पुस्तक से नहीं, वरन जीवन से है। जीवन से ही धर्म का शुभारंभ होना चाहिए और धर्म के मार्ग से गुज़रने के बाद हमारे अनुभव, हमारे परिणाम जो सम्पादित हों, वे ही जीवन के अनुभव और जीवन की किताब बन जाये। पुस्तकीय ज्ञान केवल बुद्धि और मस्तिष्क का विकास करता है। इससे जीवन में वह फूल नहीं खिलेगा, जिसकी सुवास से वातावरण सुर्भित होता है, पर्यावरण प्रफुल्लित होता है, जीवन कुसुमित और आनंदित होता है।

सामान्यत: मनुष्य मन और बुद्धि से जीता है। मन से जीना तनाव को जन्म देना है और बुद्धि से जीना पांडित्य में वृद्धि करना है, पुस्तकीय ज्ञान की अभिवृद्धि करना है। जीवन का आनंद और उत्सव ना तो मन में है और ना बुद्धि में है। हमने बड़े-बड़े विद्वानों को बुद्धू बनते देखा है, और बुद्धू से दिखाई देने वाले कभी-कभी अति बुद्धिमानी की बात कर जाते हैं। आपको आनंद और उत्सव का आस्वादन करना है। तो हम आपके भीतर के अज्ञात सागर की बात करना चाहते हैं।

वह अज्ञात सागर मनुष्य के मस्तिष्क के ठीक मध्य बिन्दु पर है। मन और बुद्धि तो परिधि पर है। जैसे कि नाभि भी परिधि पर है। सागर का केन्द्र है मनुष्य का हृदय। हृदय जब नीचे की ओर बहता है तो वो विकार का रूप ले लेता है। यह एक परिधि है। हृदय जब ऊपर बढ़ता है तो बुद्धि में होता है, यह है दूसरी परिधि। हमारे लिए प्रज्ञा परिधि और हृदय मूल केन्द्र है। जब व्यक्ति हृदय से जीता है तो महसूस होता है कि उसके सिर तो है ही नहीं। हम यही चाहते हैं कि व्यक्ति सिर

विहीन होकर हार्दिक हो जाये, बुद्धि से आप दूसरों के प्रश्नों का समाधान कर सकते हैं, लेकिन हृदयवान होने पर सारे सवाल ही तिरोहित हो जायेंगे। आपके पास प्रश्न ही नहीं होंगे, बल्कि आप स्वयं ही एक समाधान हो जायेंगे, उत्तरों के उत्तर, जवाबों के जवाब। प्रज्ञा के द्वारा मन को जीतेंगे, प्रज्ञा से प्रश्नों का उत्तर देंगे और तर्क को काटेंगे, परंतु हृदय से अन्यों को और करीब लायेंगे। हृदय से एक सेतु बनायेंगे, हृदय से संवेदनशीलता का निर्माण करेंगे, जिसकी आज के ज़माने में मृत्यु हो चुकी है।

अगर हृदय के द्वार नहीं खुलेंगे, तो जीवन अंधकारमय..., फिर चाहे मन कितना ही मौन क्यों ना हो, या बुद्धि अपनी पूरी गहराई पर हो। हृदय में उतरे बिना जीवन में सरसता नहीं आयेगी।

मन और बुद्धि से जीने वाले के लिए हृदय विभाव दशा है, और हमारे लिए स्वभाव दशा है। हार्दिक व्यक्ति अपनी ओर से हर समय, हर क्षण प्रेम बरसाता है, जबकि प्रज्ञा मनीषियों की दृष्टि से ये प्रेम राग है, दु:ख है, विभाव दशा है। आपके जीवन में सरसता होनी चाहिए। जब आप नितांत एकांत के क्षणों में हो और हृदय में स्नेह की रसधार न हो, तो जीवन की सार्थकता ही क्या! जीवन में रस न हो, प्रेम का झरना न हो, हृदय का उत्सव न हो, आनंद का उत्सव न हो, तो जीवन में क्या पाया!

हृदय के पास अपनी आँख है। ऐसी आँख जो सारे संसार को देख सके। संसार से टूट तो सभी सकते हैं, पर जुड़ हर कोई नहीं सकता। आप एक संकुचित दायरे से तो स्वयं को जोड़ सकते हो, लेकिन कहा जाए कि सम्पूर्ण अस्तित्व को स्वयं में समाविष्ट कर लो, तो यह कठिन कार्य होगा। प्रार्थणाएं ज़रूर विश्व कल्याण की कर लेते हो, लेकिन कल्याण न तो कोई करता है, ना कोई चाहता है।

आप अपने बेटे को जिस समय सौ रुपये दे रहे हैं, उसी क्षण कोई ज़रूरतमंद पहुँच जाये तो उसकी उपेक्षा कर बैठेंगे, उसे लौटा देंगे। हमारे हृदय में सभी के लिए प्रेम नहीं है, एक सीमा तक ही प्रेम विस्तीर्ण होता है। आपका प्रेम हृदय से उत्पन्न नहीं हुआ है, आपका प्रेम ध्यान से निस्पन्न नहीं हुआ है। जब प्रेम हृदय और ध्यान से आयेगा, तो वह कुछ पाना नहीं चाहेगा, सदा देने को तत्पर होगा। जिस क्षण प्रेम लुटाया जाता है, एक नये धर्म का उद्भव होता है, जिसे हम करुणा कहते हैं। जब तक लुटने का भाव न आये, लुट जाने की आकांक्षा न हो, तब तक करुणा प्रेम रहता है, यही प्रेम जब पाने की इच्छा करने लगता है, तो मन का विकार हो जाता है।

हम यहाँ मन को साधने की बात नहीं करते, मन को तो विसर्जित करना है, हृदय से जीना है। हृदय से जीकर ही जीवन का आनंद लिया जा सकता है। हृदय ही आनंद का द्वार है। हृदय में एकाग्र होते ही आनंद का विस्फोट होता है। हृदय में रहकर हर क्षण आनंद में रह सकते हो। हृदय की आँखों से केवल इंसान में प्रभु की मूरत दिखाई नहीं देती, बल्कि पेड़-पौधों, फूल-पत्तों, नदी-झरनों में भी उसी प्रभु की मूरत दिखाई देती है।

व्यक्ति को हृदय के द्वार खोलना सीखना है। हृदय के द्वार खुल जाना ही आनंदमय जीवन जीने का आधार है। द्वार खुला है सबके लिए, जहाँ सिर्फ लुटाना ही लुटाना है। बस यही जीवन है।

सांगली-महा.। 'सकारात्मक विचारों के द्वारा मन की शांति' कार्यक्रम के उद्घाटन पश्चात् समूह चित्र में राजयोगी ब्र.कु. सूर्य,माउण्ट आबू, महानगरपालिका सभापति बसवेश्वर सातपुते, आई.ए.एस. अधिकारी नाना साहेब पाटील, उद्योजक गिरीश चितळे, ब्र.कु. सुनिता, ब्र.कु. गीता तथा अन्य।

सिहोरा-म.प्र.। ज्ञानचर्चा के पश्चात् जेल अधीक्षक को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. कृष्णा।

जबलपुर-जय भीम नगर(म.प्र.)। मासिक व्याख्यान माला 'एक कदम दिव्यता की ओर' कार्यक्रम में अपनी शुभकामनायें देते हुए शासकीय आयुर्वेदिक महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. आर.एस. श्रीवास्तव। साथ हैं डॉ. के. कुमार, ब्र.कु. बाला तथा सेवाकेन्द्र प्रभारी ब्र.कु. आरती।